



What is Arya Samaj?

Arya Samaj, founded by Maharshi Dayanand Saraswati, is an institution based on the Vedas for the welfare of universe. It propagates universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 36

11/2013-14

MONTHLY

May 2014

Saturday 17th May 2014

For

Vedic Vivah Mela

(Matrimonial Get Together)

Please see April Aryan Voice for all information

Venue

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS

(Charity Registration No. 506019)

ERSKINE STREET, NECHELLS, BIRMINGHAM B7 4SA

TEL: 0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org

Website: www.arya-samaj.org

Page 1

CONTENTS

Mantra	Shri Krishan Chopra	3
अध्यात्म के शिखर पर-7	आचार्य डॉ. उमेश यादव	5
Know Thy Vedas	Prem Sabhalok	8
The Benefits of Banana	Health Corner	11
संस्कार	आचार्य डॉ उमेश यादव	13
News (पारिवारिक समाचार)		15

For General and Matrimonial Enquiries

Please Ring

Miss Raji (Rajashree) Chauhan

(Office Manager)

Office Hours

Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,

Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm

Weekend & Bank holidays Closed

Tel. 0121 359 7727

Pilgrimage of Divine Qualities

श्रेष्ठं यविष्ठमतिथिं स्वाहुतं जुष्ठं जनाय दाशुषे ।
देवाँ अच्छा यातवे जातवेदसमग्निमीङ्ले व्युष्टिषु ॥

ऋग्वेद १.४४.४

shreshtham yavishthamtithim svaahutam jushtam janaaya daashushe ।
devaam achaa yaatave jaatvedasam agnimeede vyushtishu ॥
Rig Veda 1.44.4

Meaning in Text Order

shreshtham = sublime, yavishtham = young, atithim = guest,
su aahutam = adorable, jushtam = dearest, janaaya = for those people,
daashushe = self sacrificing, devaan achchaa = to wards divine qualities,
yaatave = leaning , jaatvedasam = omniscience, agnim = omnipresent God,
eede = glorify, vyushtishu = at dawn.

Meaning

To be inclined towards divine qualities, I glorify the Lord who is sublime, young, Omnipresent, worthy of adoration like a guest. Who is dearer to those who scarify themselves for the sake of others.

Contemplation

All human beings mental faculty is pervaded by the three modes which are known as harmonious (satva), passionate (rajas) and slothful (tamas).

These are also three modes of nature. When there is realm of purity in our mind then we contemplate to have pilgrimage of divinity. When our purity

or harmony or the mode of purity reaches to the peak then we elevate ourselves and resolve in our mind to follow the path of truth, justice, compassion and generosity. This spirit of our mode of purity inspires us to lead the life of people who have followed the path of divinity.

The question is how we can understand that at this moment the state of our mind is pure? It is not difficult to understand the mode of purity is ruling our mind. When the light of knowledge streams forth in all the gates of our body, at that time our mind is in the mode of purity.

The Satva Guna, harmony and purity brings to our mind illumination, cheerfulness, optimism, calmness, selflessness and clarity in our thoughts.

Divine people are those who meditate and lead the life of purity and that is possible only with the grace of God . To walk on this path is only possible when there is within us a deep desire, compelling effort and grace of God . When the first ray of sun appears on the horizon we worship the Almighty Lord and take the inspirations from Him to follow His divine qualities.

God is the powerhouse of immense strength. He is ever young. He never gets old like ordinary people. He is worthy of worship like a guest. He accepts the dedication of His devotees with open heart. He is present in all things and knower of all.

O Lord! Grant us the wisdom of sublimity, make us a divine person. May we become the pilgrims of divine qualities.

Krishan Chopra

अध्यात्म के शिखर पर-८

आचार्य डॉ. उमेश यादव

जैसा कि हम जान चुके हैं कि ईश्वरीय स्तुति, प्रार्थना और उपासना अध्यात्म के शिखर को पाने के लिये महत्त्वपूर्ण सोपान हैं। विगत निबन्ध में स्तुति प्रार्थना के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये थे। अब उपासना के लिये उदाहरण द्रष्टव्य है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वकृत सँस्कारविधि में यज्ञारम्भ हेतु ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना विधि को नियमतः लिखा। यहीं से उपासना का उदाहरण यहाँ देखें:-

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता, धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।

यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥ यजु.३२.१०

अर्थ- हे मनुष्यों ! सः-वह परमात्मा नः- अपने लोगों का बन्धुः-भ्राता के समान सुखदायक, जनिता-सकल जगत्का उत्पादक, सः- वह विधाता- सब कामों का पूर्ण करने हारे विश्वा(विश्वानि)-सम्पूर्ण भुवनानि-लोकमात्र और धामानि-नाम, स्थान और जन्मों को वेद- जानता है और यत्र- जिस तृतीये सांसारिक सुख-दुःख से रहित नित्य आनन्दयुक्त धामन्मोक्षस्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में अमृतम्मोक्ष को आनशानाः- प्राप्त होके दिवाः- विद्वान्लोग अध्येरयन्त-स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है; अपने लोग मिलके सदा उसकी भक्ति किया करें।

उपरि लिखित अर्थ महर्षि दयानन्द द्वारा स्वयं किया हुआ है । प्रभु का सान्निध्य पाकर आनन्द की अनुभूति करता हुआ जब विद्वान्‌लोग जीवन में अथवा मृत्यु के

पश्चात्स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं तब समझो कि उपासना सिद्ध हो रही है । आनन्द की अनुभूति और स्वतन्त्रता ही उपासना का फल है ।

इस मंत्र का कवितार्थ मैंने महर्षि देव दयानन्द की भवनाओं का ध्यान रखते हुये इस प्रकार किया:

न्यायाधीश राजा भी तू ही, नित्यानन्द स्वरूप प्रभो,
गुरु अरु आचार्य तू ही है, हम मिलकर तुझे अब गाते हैं ।
बन्धु पिता तू धाम विधाता, ज्ञानी हैं आनन्द के दाता,
तुझे ही पाकर मुक्त होते सब, तभी तो तुझको ध्याते हैं ॥

सन्दर्भानुसार यहाँ यह विचार अपेक्षित हो जाता है कि स्तुति-प्रार्थना-उपासना-प्रकरण में ऋषि ने ८ मंत्र लिखे जिसमें ४ मंत्र स्तुति के, ३ मंत्र प्रार्थना के और एक ही मंत्र उपासना परक है । ऐसा क्यों ? यह चिन्तन का विषय है । मुझे प्रतीत होता है कि सम्बन्ध बनाने और विश्वास जीतने में स्तुति प्रथम पहलु है जिसमें समय अधिक लगता है । विश्वास जीत लेने पर प्रार्थना सफल होने में थोड़ा कम समय लगता है और इसी प्रकार स्तुति और प्रार्थना का आधार मजबूत हो तो उपासना - सिद्धि में क्षणमात्र में ही प्रभु की कृपा हो जाती है । अतः पहले सम्बन्ध बनाना, जान-पहचान बढ़ाना, परस्पर प्रीति पैदा करना और विश्वास जीतना यह सब प्राथमिक कार्य हैं जिसमें समय अधिक लगना स्वाभाविक है । फिर

आवश्यकतानुसार माँग रखने में माँग की पूर्ति शीघ्रतर सम्भावित है। उपासना आनन्द दायक है। प्रार्थना सार्थक हुई तब सुख ही सुख है। फिर आनन्द का बढ़ना अत्यन्त सरल बन जाता है। ऐसी स्थिति में प्रभु की कृपा से उपासना तो शीघ्रतम अर्थात्क्षण भर में सिद्ध हो सकती है।

ध्यातव्य है कि स्तुति प्रार्थनोपासना विधि के प्रस्तुत ८ मंत्रों में ये ४ मंत्र स्तुति के हैं- १. हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे....., २. य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते....., ३. यः प्राणतो निमिषतो..... और ४. येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा.....। इन मंत्रों में केवल और केवल प्रभु का गुण-गान किया गया है। यहाँ ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव का वर्णन शुद्धरूप से किया गया है। इन मंत्रों के अर्थवोधन से परमात्मा के गुण-कर्म-स्वभावों को स्पष्टरूप से जानकर प्रभु से प्रीति बढ़ाते हुये स्वयं के गुण-कर्म-स्वभाव भी उतरोतर उत्तम बना सकते हैं। इसी प्रकार ३ मंत्र प्रार्थना हेतु पठित हैं- १. विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव...., २. प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो....., ३. अग्ने नय सुपथा राये इति तथा एक ही मंत्र - स नो बन्धुर्जनिता स विधाता.... उपासना के लिये है।

यहाँ यह भी विचारणीय है कि स्तुति-प्रार्थना-उपासना तीनों एक-दूसरे के पूरक हैं। अगर स्तुति ठीक न हुई तो प्रार्थना भी झूठी होगी, उपासना की तो कोई कल्पना भी नहीं की जा सकती। इन आठों मंत्रों का अर्थ स्पष्टतः महर्षि दयानन्द कृत सँस्कार विधि के सामान्य प्रकरण यज्ञारम्भ विधि में उपलब्ध है। इस पर चिन्तन-मनन करना हर पाठक का कर्तव्य और उन्हें अच्छी तरह समझना उनका ध्येय होना उचित है।

Know Thy Vedas

Rig Veda mentions that the greatest service to God is to spread the spirit of Vedas with honesty, straight-forwardness, without deceit of any kind, for all to enjoy true and spiritual happiness.

Subject: Vedic Physical Sciences and Scientific Temper

The Vedas combine science with metaphysics and clearly mention that it is God who is the giver of knowledge of all sciences as "Sahstra sam " (R.V. 1-10-11).

The scientists are advised to study cause and effect of all material elements and also how the objects are produced and there after utilize these properly (R.V. 5-47-3). By following these guidelines they can alleviate much suffering of the people (R.V. 5-77-4). Without the knowledge and practical application of physical sciences, it is not possible to eradicate poverty and attain prosperity (R.V. 1-34-1 to 5).

In the Rig-Veda the focal point is the human being and the knowledge about physical sciences contained there in is for the welfare of the entire mankind. This knowledge also helps the human beings to develop Scientific Outlook.

To get a feel of Vedic physical sciences, reference to a few hymns are given in the very beginning. The Sun never sets or rises and it is the earth, which rotates (Sama Veda121). The gravitational effect of solar system makes the earth stable

(R.V.1-103-2, 1-115-4 and 5-81-2). The subtle axle of the earth does not get rusted and the earth continues to revolve on its axle (R.V. 1-164-29). The science of Time and its subtle nature is described in (R.V.1-92-12 and

1-95-8). The need to study the properties of water, air and fire for discovering and manufacturing aircrafts, ships and other vehicles capable of moving in the firmament, land and water are mentioned in Rig Veda 1-3-1,2, 1-34-1, 1-140-1 and many other hymns.

Physical sciences relating to agriculture, medicine, astronomy mathematics particularly algebra, toxicology etc. are described in R.V.1-71-9, 4-57-5, Sama Veda 121 and many other hymns/riks.

For a better appreciation of Vedic science, a few terms used in the original Vedic bhasha (language) as contained in the mantras/riks are mentioned. Viman diye neshu for vehicles like aircrafts (RV 1-34-1, 9 and 1-85-7). Vaj gatau- very high-speed vehicles in the air (R.V 6-60-12). Rekha di ganit vidys vigyaya- the science of Algebra (R.V 1-19-1). Surya Vidyau tau- knowledge of the Sun and electricity. Indr-agani- power, energy and electricity (R.V 6-60-12, 13),krishna garbha- knower of Algebra (R.V 6-75-2). Vidyamadi bha vidyut vidyante yashate- in which electric telegraph wires have been arranged (R.V 1-88-1).

Many other terms and words relating to physical sciences can be found in these hymns like kanu, anu, bhutas, maha bhutas, tatva, maha tatva etc., The other terms have been used like Ratha for vehicles moving in the firmament and middle region, on the surface of the earth and over the water, ashvinau for scientists, anu and kanu for gross and subtle atoms, tan matras for sub atomic particles sponda for sound etc.

Few other words are amritasya nidhi - ambrosia (R.V. 1-186-3), Brahamand pinda i.e macrocosm and microcosm. In Yajur Veda 18-24 and 25 many terms relating to addition, subtraction, division, square, cube, square root, and cube root have been used. Yajur Veda 18-22 and R.V. 6-22-2 also refer to certain other terms of the physical sciences.

In the Vedas scientists are described as men and women of absolute self-control, truthful with scientific outlook and destroyers of miseries (R.V., 1-

3-4). With the help of these scientists one could travel far on the earth and also in the sky through conveyances, which run and touch the middle region (R.V., 1-3-1, 6-22-2 and 1-22-2).

Such scientists from both the sexes go across to distance places quickly like the mind and electricity (R.V., 1-71-9). In this hymn aircrafts and even space ships are hinted. These ashvinaus should be well versed in Physics, agricultural sciences (R.V. 4-57-5), medical sciences (R.V. 5-74-3), astronomy (S.V. 121) and other sciences.

There is a mention of infrared rays, study of Algebra (Rekha di ganit vidya), sound as a medium of knowledge for various sciences, diseases like bile, cough, jaundice and others and their treatment etc. The relevant hymns in this regard are in Rig-Veda 1-185-2, 1-12-1, 2, 1-22-1 to 4, 1-2-3, 1-95-1, 1-101-1 and many other.

Website<http://www.sabhlokcity.com/metaphysics/>

Prem Sabhlok

The Benefits of Banana

Adding a banana to your daily diet has an array of benefits in your body. Bananas help you reach your weight-loss goals, keep your bowels healthy, provide nutrients that regulate heart rhythm and have vitamin compounds for eye health.

Weight Loss

Finding foods to fit into your weight-loss diet can be challenging, but bananas make a perfect fit. Bananas are naturally sweet and can help curb your sweet tooth if you get that afternoon sugar craving. A 6-inch banana has a minimal 90 calories, about one-fourth of the calories you would get from a chocolate candy bar. Additionally, about half of the fiber content in bananas is soluble. When soluble fiber reaches your digestive tract, it absorbs water and slows digestion. Food is forced to sit in your stomach for a while, making you feel full. If you have a banana before lunch, you'll be less likely to overeat when your food comes to the table.

Regularity

Enjoying a banana each day aids in keeping you regular. One 6-inch banana has more than 2.5 grams of total fiber, about half of which are insoluble. As insoluble fiber travels through your digestive tract, it sweeps up waste and helps push it out. You'll have more regular bowel movements that are soft and easy to pass. Keep your bowels healthy by getting 14 grams of fiber in your diet for every 1,000 calories you consume, reports Colorado State University Extension. For example, if you tend to stick to an 1,800-calorie diet, you need about 25 grams of total fiber. You get nearly 10 percent of your daily fiber needs -- for this number of calories -- from one 6-inch banana.

Normal Heart Function

Having a banana at breakfast every day adds a nutrient to your body to support normal heart function. Bananas are rich in a mineral electrolyte called potassium. When potassium enters your body, it absorbs directly into your bloodstream through intestinal walls. Potassium travels around to cells all over your body and dissolves in fluid inside of cells. It travels across cell membranes if needed to keep fluid balanced in and around cells. This process keeps electricity flowing throughout your system, which is required to make your heart beat. In cases of severe potassium deficiency, your heart rhythm may become irregular, which can be deadly. According to the Linus Pauling Institute, you need 4,700 milligrams of potassium on a daily basis. Bananas provide more than 360 milligrams per 6-inch piece of fruit.

Eye Health

Adding a banana to your diet also helps keep your eyes healthy. Bananas have a small amount of vitamin A, a fat-soluble vitamin that is vital for protecting your eyes and normal vision. The term "vitamin A" refers to a series of compounds, including beta-carotene and alpha-carotene. These compounds preserve the membranes that surround your eyes and are a component of one of the proteins that brings light into your cornea. Adequate daily vitamin A intake also lessens your risk of night blindness and is essential for everyday vision. Women require 700 micrograms of daily vitamin A, and men need 900 micrograms, explains the Office of Dietary Supplements. One 6-inch banana has nearly 10 micrograms of vitamin A. Bananas also contain alpha-carotene and beta-carotene, which convert to vitamin A to further keep your eyes healthy.

सँस्कार-२

आचार्य डॉ. उमेश यादव

सँस्कार एक प्रक्रिया है परन्तु यह प्रक्रिया एक निश्चित प्रभाव डालती है। एक लोहार मार्ग में जाता हुआ एक लोहे का टुकड़ा प्राप्त करता है। यद्यपि वह टुकड़ा गंदगी व जंग से भरा हुआ था, फिर भी लोहार उसे उठा कर घर लाता है। अनुभवी लोहार होने के नाते वह लोहे का महत्त्व अच्छी तरह जानता है, इस कारण वह उसे उठा लेता है वरणा साधारण व्यक्ति तो उसे उठाता ही नहीं। लोहार उसे भट्ठी में तपाकर साफ करता है, फिर उसे काट-काट कर उससे कई उपयोगी औजार बना डालता है-जैसे कस्सी, हल का फाल, हँसिये, खुर्पी इत्यादि। इन नव निर्मित वस्तुओं को बाजार में जाकर मँहगे दामों पर बेचकर खूब पैसा कमाता है और इस प्रकार धनी और सुखी बन जाता है। वस्तुतः लोहार ने गंदगी और जंग भरे लोहे को भट्ठी में तपाकर सँस्कारित किया। वही लोहा कीमती हो गया। उससे निर्मित वस्तुयें भी मानो सँस्कारित होकर कीमती हो गयीं। ऐसे ही माता-पिता वा आचार्य अपनी संतानों वा शिष्यों को एक निश्चित प्रक्रिया से सँस्कारित करते हैं फलतः सँस्कारित बच्चे अधिक महत्त्वपूर्ण बनकर परिवार, समाज व राष्ट्र में निखर जाते हैं। वे ही बच्चे आदर्श के प्रतीक बन जाते हैं। एक ऋषि के पास बच्चा जाकर ऋषित्व/देवत्व सीखता है पर हैवान-चोर आदि दुष्टों के पास रहकर दुष्टता, चोरी आदि बुराइयाँ ही सीखेगा। एक रोचक दृष्टांत है- एक व्यक्ति गाँव की परेशानियों से परेशान होकर सुकून-चैन के लिये जंगल की ओर जाता है। रास्ते में एक आश्रमनुमा कुटिये के द्वार पर पींजड़े में लटकते हुये तोते के मुख से जली-कटी बातें सुनता है। जैसे- यह चोर है, बदमाश है, लुटेरा है, इसे पकड़ लो, इत्यादि। वह पथिक घबराकर और जोर से भागता है। कुछ ही दूरी तय करने पर एक अन्य आश्रम के द्वार पर लटकता तोता देखा। पहले तो घबराया लेकिन इस तोते के स्वागतपूर्ण मधुर वाणी सुनकर ठहर गया-जैसे आइये, विश्राम कीजिए, आपका स्वागत है

इत्यादि । पथिक बड़ा प्रसन्न हुआ पर हैरान भी हुआ । आश्रम में जाकर देखा, यहाँ एक महात्मा साधना में लीन हैं । महात्मा की आँखें खुलते ही सादर प्रणाम करके इन तोतों का राज पूछा । बोला- महात्मन! आपके तोते ने स्वागत किया और पहले कुटिये वाले तोते ने गालियाँ दी । कृपा करके इन दोनों का राज बतायें । कहते हैं कि महात्मा बोलना ही चाहते थे कि वह तोता बोल उठा-

अहं मुनीनां वचनं शृणोमि, शृनोत्यसौ यवनस्य वाक्यम् ।

न चास्य दोषो न च मे गुणो वा, संसर्गजा दोष-गुणा भवन्तु ॥

अर्थ- मैं मुनियों की बातें सुनता हूँ, वह यवनों (दुष्ट/चोर/लुटेरे आदि) के वाक्य सुनता है । न उसका कोई दोष है , न ही मेरा कोई गुण । संसर्ग (सम्पर्क/संग) से दोष और गुण हुआ करते हैं । अर्थात् अच्छे संसर्ग से गुण और बुरे सम्पर्क से दोष का आना अवश्यंभावी है । बस ! सँस्कार का भी यही महत्त्व है । सँस्कार की सम्पन्नता एक अच्छा वातावरण, विधि, शिक्षा और आयोजन का समाहार है । इससे संतान या शिष्य पर अच्छा प्रभाव बनना लाजमी है । इसी कारण महर्षि दयानन्द ने अपनी सँस्कार-विधि की भूमिका में इसका महत्त्व बतलाते हुये लिखा-

“जिस करके (सँस्कार से) शरीर आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं और संतान अत्यन्त योग्य होते हैं । इस लिये सँस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है ।”

सँस्कार तो औषध रूप है जो संतानों के वैचारिक, मानसिक, नैतिक आदि विकास में आने वाली बिमारियों को दूर करने में अत्यन्त सहायक है । ऐसा न करने पर ही संतानों में विपरीततायें, नाकारात्मक विचार तथा दीनता-हीनता मूलक प्रवृत्तियाँ पनपती हैं और जीवन की विपरीत दिशा में जाने हेतु प्रवृत्त करती हैं । अतः हमें क्रमशः सँस्कारों की महत्ता जाननी ही होगी ।

Heart felt sympathy to

- Mrs Chetna and Mr Shailesh Joshi for the loss of Chetna's Mother Mrs. Madhu Kanta Jani at the age of 82. She lived in Dar es Salaam, Tanzania.
- Wife Mrs. Swaran Kaila, Rajiv (son), Joy (daughter in-law), Indu (daughter) and Mr. Jonathan (son in-law) for the passing away of Mr. Anand Prakash Kaila of Lichfield.

Thanks for being Yajman sponsoring Rishi- Langar in Arya Samaj West Midlands in our Sunday Satsang

23.03.2014: Mr. and Mrs. Krishan & Surat Nischal to bless grand child Rishika new baby daughter of Mr and Mrs. Sukesh & Ritu Nischal

06.04.2014: Dr. Narendra Kumar and family for Mundan Sanskar of their grand child Aryan son of Andrew and Priyanka.

Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one please contact Acharya Dr Umeh Yadav on 0121 359 7727

DONATIONS TO ARYA SAMAJ WEST MIDLANDS

Dr Narendra Kumar	£100	Mr Prem Nanda	£21
-------------------	------	---------------	-----

Mr Anand Vrat and Mrs Renuka Chandan and founder members of the Arya Samaj West Midland, for the birthday of the Grand children Aayush, Theo and Lewis. £31

Mrs Asha Verma	£5	Mrs Surat Nischal	£20
----------------	----	-------------------	-----

Mr K. Sethi	£11	Mrs Savitri Gupta	£11
-------------	-----	-------------------	-----

DONATIONS TO ASWM through PRIEST SERVICE

Mr Sudesh Sethi for Grih-pravesh havan at daughter Aruna's house and to bless new baby grand son Zachary Alexendra. Ilei Alexendra is child's father.

£101

RISHI LANGAR DONATION

Mrs Surat Nischal

£150

6th April 2014 Rishi Langar was provided by Dr Narendra and Mrs Shama Kumar

- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 4th May 2014 and 1st June 2014**
- **Saturday 17th May 2014 Vedic Vivah Mela (Matrimonial Get Together) Please see April Aryan Voice for all information**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

Tel. No. 0121 359 7727.

E-mail- enquiries@arya-samaj.org,

Website: www.ara-samaj.org